माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ0 प्रेम पाल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ0प्र0

सारांश :–

समायोजन व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंग है। इसका आशय है कि व्यक्ति जिस वातावरण में रह रहा है उसके अनुरूप स्वयं को ढाल लेना अर्थात् नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य बैठाना। विद्यार्थी जीवन में भी समायोजन अपनी अहम भूमिका निभाता है। सकारात्मक समायोजन शैक्षिक उपलब्धियों की ओर अग्रसर करता है। कहने का तात्पर्य यही है कि समायोजन किसी न किसी स्तर पर विद्यार्थी को करना पड़ता है। सकारात्मक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक परिणाम की ओर ले जाता है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन हेतु न्यायदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के जनपद बरेली के नगर क्षेत्र बरेली में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 288 और गैर अनुसूचित जाति के 653 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु सिन्हा एवं सिंह (2007) द्वारा निर्मित विद्यालयी बालकों की समायोजन अनुसूची (AISS) का प्रयोग किया है। शोधकर्ता ने सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण स्वयं निर्मित किया है जो शोध में प्रयोग किया गया है। परीक्षण में कठिनाई स्तर और विभेदीकरण क्षमता को भी निकाला गया है। परीक्षण में उन्हीं प्रश्नों को सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में चयन किया है जिनका कठिनाई स्तर 0.4 से 0.6 के मध्य और विभेदीकरण क्षमता 0.3 से अधिक है।

प्रस्तावना :–

समायोजन व्यक्तितव का महत्वपूर्ण अंग है। इसका अशय है कि व्यक्ति जिस वातावरण में रह रहा है उसके अनुरूप अपने आपको ढाल लेना। समायोजन शब्द जीव विज्ञान के अनुकूलन का पयार्यवाची भी है जिसका तात्पर्य है कि नवीन परिस्थितियों से अपना सामंजस्य बिठाना। प्रत्येक मनुष्य सतत रूप से आवश्यकताओं की पूर्ति एवं लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयासरत रहता है। इस प्रयासरत अवस्था में उसके ऊपर निश्चित व्यवहार करने के लिए पर्यावरण का भी दबाब रहता है। समायोजन के द्वारा व्यक्तिगत एवं पर्यावरण मांग में सामंजस्य स्थापित किया जाता है। समायोजन की प्रक्रिया बालक के जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है। बालक शैशवावस्था से ही अपने पारिवारिक वातावरण में रहता है, यही वातावरण उसके भीतर एक समायोजन का सकारात्मक वातावरण का निर्माण करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति अपने आस–पास की परिस्थितियों का आंकलन करने के बाद अपने आपको उसी के अनुरूप नियोजित करता है और अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाकर अपने व्यवहार को परिस्थितिनुसार समायोजित करता है। स्मिथ (1968) के अनुसार अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ है, यह कुण्ठाओं, दुश्चिन्ताओं को जहाँ तक सम्भव है कम करता है। स्किनर (2004) के अनुसार सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ तथा उत्साहमय ढंग से भाग लेना, समय पड़ने पर नेतृत्व का भार उठाने की सीमा तक उत्तरदायित्व वहन करना तथा सबसे बढ़कर समायोजन अपने को किसी भी प्रकार का धोखा देने से बचने की कोशिश करना। कुप्पू स्वामी (1986) के अनुसार समायोजन के फलस्वरूप प्रसन्नता होती है क्योंकि इससे संवोगात्मक द्वन्द्व और तनाव दूर हो जाते हैं। गेटस व अन्य (1948) के अनुसार समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हुए अपने पर्यावरण से अपना सम्बन्ध अच्छा बनाता है।

बालकों को सुसमायोजन की ओर अग्रसर करने में परिवार और अभिभावक अपनी अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। परिवार और अभिभावक अपने बच्चों को सोचने, निर्णय लेने और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता का अवसर दें और उन पर किसी भी प्रकार का अनावश्यक बन्धन एवं जोखिम कार्यों को न दें। इससे बच्चों में नकारात्मक दृष्टिकोण एवं नकारात्मक भावनायें तथा संवेग जागृत नहीं होंगे और उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बार्कर (1948) का अपना अध्ययन शिक्षक समायोजन एवं शिक्षण कुशलता के सम्बन्ध पर था। अपने अध्ययन में पाया कि जीवन समायोजन एवं शिक्षण–कुशलता का सहसम्बन्ध 0.09 से 0.35 है और कार्य–समायोजन एवं शिक्षण कुशलता में सहसम्बन्ध 0.36 से 0.58 है। वर्मा (1968) ने अपना शोध भग्नाशा और कुसमायोजित किशोर विद्यालयी छात्रों पर किया। अपने अध्ययन में पाया कि असफल समूह के छात्र सामान्य समूह से कम सुसमायोजित थे, जिनमें छात्रायें छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित थीं। पैरिरा (1974) ने अपने अध्ययन में प्रारम्भिक किशोरावस्था में मानसिकता पर प्रभाव डालने वाले मुख्य कारकों का अध्ययन किया। अपने अध्ययन निष्कर्ष में पाया कि सुसमायोजित छात्र और कुसमायोजित छात्र आवश्यकताओं, आत्मविश्वास, चिन्ता एवं बुद्धिमता में अलग थे परन्तु उनकी विद्यालयी उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। शर्मा (1974) ने अपने अध्ययन के लिए हाईस्कूल कक्षाओं के छात्रों को सम्मिलित किया और उन पर सामाजिक मापन स्तर के सह–सम्बन्धों का अध्ययन किया और अपने अध्ययन निष्कर्ष में पाया कि स्वीकृत बच्चें अस्वीकृत बच्चों की अपेक्षा सामाजिक समायोजन में अधिक अच्छे पाये गये। चन्द (2005) ने अपने अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति के किशोर लड़के और लड़कियों की भग्नाशा का उनकी बुद्धि, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं समायोजन में सम्बन्ध ज्ञात करना रखा। अपने अध्ययन निष्कर्ष में पाया कि उच्च स्तर समायोजन वाले छात्र भग्नाशा में निम्न समायोजन वाले छात्रों से सार्थक अन्तर रखते थे। उपरोक्त शोध अध्ययनों में ऐसा कोई भी अध्ययन नहीं हुआ जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया हो। अतः यह अध्ययन इस अभाव की पूर्ति करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं इतिहास की उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं नागरिक शास्त्र की उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं भूगोल और अर्थशास्त्र की उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें :

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं इतिहास की उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं नागरिक शास्त्र की उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं भूगोल और अर्थशास्त्र की उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
4. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि में सम्बन्ध सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि :–

इस अध्ययन में शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु न्यायदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के जनपद बरेली के नगर क्षेत्र बरेली में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 288 और गैर अनुसूचित जाति के 653 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु सिन्हा एवं सिंह (2007) द्वारा निर्मित विद्यालयी बालकों की समायोजन अनुसूची (AISS) का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत समायोजन से सम्बन्धित तीन आयाम क्रमशः संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन है। प्रत्येक आयाम से सम्बन्धित प्रश्नों की संख्या 20 दी गयी है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध–विच्छेद विधि, परीक्षण पुनः परीक्षण और के0आर0 फार्मूला से निकाली गयी है। विद्यालयी बालकों की समायोजन सम्बन्धी अनुसूची के कुल विश्वसनीयता गुणांक संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर पर क्रमशः 0.95, 0.93 और 0.96 है, जो इस परीक्षण की उच्चस्तरीय विश्वसनीयता को अवगत कराता है। समायोजन अनुसूची वैधता का निर्धारण छात्रावास में रह रहे 60 हायर सैकेण्ड्री के विद्यार्थियों को छात्रावास अधीक्षक की रेटिंग के आधार पर किया गया है। इस अनुसूची के अंकों तथा अधीक्षक की रेटिंग के मध्य सहम्बन्ध का मान 0.51 प्राप्त हुआ। शोध में शोधकर्ता ने सामाजिक विज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया है जिसमें इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र के प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में कठिनाई स्तर 0.4–0.6 के मध्य और विभेदीकरण क्षमता 0.3 से अधिक वाले प्रश्नों को ही रखा गया है। समायोजन प्रदर्शन करने वाले पदों को 0 अंक तथ नहीं करने वालों को 1 अंक दिया गया है। प्रत्येक समायोजन क्षेत्र के प्राप्तांकों के आधार पर यदि कम अंक आये तो समायोजन अधिक अच्छा रहा और यदि अंक अधिक है तो समायोजन अधिक असन्तोषजनक होगा। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्रदत्तों को समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि के विभिन्न पक्षों को वर्गीकृत किया गया है। निष्कर्ष निकालने हेतु समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान के विभिन्न पक्षों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की गयी है।

प्रदत्तों का विश्लेषण, विवेचन एवं निष्कर्ष :–

तालिका संख्या–01 : माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि के विभिन्न पक्षों के मध्य सहसम्बन्ध

	इतिहास	नागरिक शास्त्र	भूगोल एवं अर्थशास्त्र	सामाजिक विज्ञान उपलब्धि
समायोजन	- 0.158*	- 0.208*	0.158*	0.230*

* 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या–01 को देखने से ज्ञात होता है कि समायोजन का इतिहास के साथ सहसम्बन्ध – 0.158, नागरिक शास्त्र के साथ सहसम्बन्ध – 0.208, भूगोल और अर्थशास्त्र के साथ सहसम्बन्ध 0. 158, सामाजिक विज्ञान की कुल उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध 0.230 है। उपरोक्त सभी सहसम्बन्ध 939 डी0एफ0 के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना सं0 1, 2, 3 एवं 4 अस्वीकृत की जाती है।

References :

1. Smith, H.C. (1968). *Personality Development*. New York : M.C. Graw Hill.
2. Skinner, C.E. (2004). *Educational Psychology* (IVth Edition). New Delhi : Preintice Hall of India Pvt. Ltd.
3. Kuppuswamy (1986). *Advanced Educational Psychology*. New Delhi : Sterling Publisher Pvt. Ltd.

4. Gates & Others (1948). *Educational Psychology*. New York : The Macmillan Co., PP-614-15.
5. Barker, A.M. (1948). Summary of the relation of personality adjustment of teachers to their efficiency in teaching. *Journal of Education Research*, Vol. 41, PP. 664-675.
6. Verma, V. (1968), Frustration and Mala adjustment of retorted adolescent school students. Unpublished Ph.D. Thesis (Edu.), Lucknow University of Lucknow.
7. Pareira (1974). A Study of five major factor, contribution to certain psychological problem of pre-adolescent, unpublished Ph.D. Thesis (Edu.), Mysore University, Mysore.
8. Sharma, M. (1974). A Study correlation of social measurement level of high school students, unpublished Ph.D. Thesis (Edu.), Meerut University, Meerut.
9. Chand. D. (2005). A Study of frustration among scheduled caste adolescent boys and girls in relation to their, intelligence, socio-economic study and adjustment, unpublished Ph.D. Thesis (edu.), M.D. University, Rohtak.
10. Sinha, A.K.P. and Singh, R.P. (2007). *Manual for Adjustment Inventory for School Students (AISS).* Agra : National Psychological Corporation.